शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग

डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया

शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग

डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया

© लेखकाधीन

❋

प्रथम संस्करण — २००२

❋

प्रकाशक
म.प्र. आंचलिक साहित्यकार परिषद्,
छतरपुर (म.प्र.)

❋

मुद्रक :
जिला सहकारी संघ मुद्रणालय मर्या०,
छतरपुर (म०प्र०)

शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग

मूल्य : 70=00 रुपये

अनुक्रम

*

पृष्ठ संख्या

अपनी बात	1	49	मुँह
लगाना	4	51	हाथ
मारना	7	54	पैर
काटना	10	57	पेट
पकड़ना	14	60	मन
उड़ना/उड़ाना	16	63	बाल
दिखाना	18	65	घर
भरना	20	68	आग
तोड़ना	23	71	पानी
बनाना	26	74	जड़
बढ़ाना	29	77	आसमान
खींचना	31	80	बिल्ली
उतारना	33	82	भारी है
खोदना	35	84	ओट/वोट
मिलना/मिलाना	37	86	चट/चाट
कान	40	88	बाबा
आँखें	43	91	एक है/ए कहै
छाती	46	93	अक्षरों की माया

*

"मैं ऐसे कई सज्जनों को जानता हूँ जो अंग्रेजी लिखते समय तो भाषा की शुद्धता का बहुत अधिक ध्यान रखते हैं, पर हिन्दी लिखते समय शुद्धता का ध्यान रखने की कोई आवश्यकता नहीं समझते। अपनी भाषा की प्रकृति से वे लोग बिलकुल अपरिचित होते हैं और हर बात में अंग्रेजी का अनुकरण करते और उसी की शरण लेते हैं। यही कारण है कि आजकल जटिल और निरर्थक भाषा लिखने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। न तो कोई यह सोचता है कि हमारी उस कुप्रवृत्ति के कारण भाषा में कितना भद्दापन आता है, न कोई यह देखता है कि हम अर्थ और अभिप्राय से कितनी दूर हटते चले जाते हैं।"

—रामचन्द्र वर्म्मा

अपनी बात

अक्षर को ब्रह्म कहा गया है। शब्दकोशों में अक्षर के जो अर्थ दिये गये हैं उनमें ब्रह्मत्व का अविनाशी, अक्षय और नित्य गुण ही ध्वनित होता है। इन्हीं अक्षरों से शब्द बनते हैं। हर शब्द का अपना विशिष्ट भावार्थ होता है। शब्द भी दो प्रकार के होते हैं - वाग्यंत्र से उत्पन्न होने वाले वर्णात्मक और वाद्ययंत्र आदि से उत्पन्न होने वाले ध्वन्यात्मक। वर्णात्मक के भी सार्थक और निरर्थक दो भेद दिये गये हैं। शास्त्रकारों ने शब्दों की महिमा का बड़ा बखान किया है। उसके विस्तार में जाने का यहाँ अवसर नहीं है। मेरा अभिप्रेत मात्र इतना है कि शब्द के मर्म को जानने वाला ज्ञानी और उसका सही प्रयोग करने वाला सफल सर्जक होता है। शब्द का सटीक प्रयोग उसके भावार्थ को उसी प्रकार नयी कांति प्रदान करता है जिस प्रकार रत्नपारखी सुनार रत्नों का आभूषणों में उपयुक्त प्रयोग कर उसके सौन्दर्य को द्विगुणित करता है। गलत या अनुचित प्रयोग उसकी शोभा को निष्प्रभ ही करते हैं। तुलसीदास ने लिखा है -

मनि माणिक मुक्ता छबि जैसी। अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी।
नृप किरीट तरुनी तन पाई। लहहिं सकल शोभा अधिकाई।
ऐसेई सुकवि कवित बुध कहहीं। उपजहिं अनत अनत छवि लहहीं।।

शब्द व्यापक भी है और गंभीर भी। एक शब्द संदर्भ-परिवर्तन के साथ अपना भाव-रूप भी बदल लेता है। शब्द के विभिन्न पर्याय समानार्थी होकर भी अलग-अलग विशिष्टताओं से सम्प्रक्त होते हैं। लहर, तरंग, उर्मि तथा पानी, जल, नीर आदि शब्द समानार्थी होकर भी अन्तरात्मा में अलग

हैं। उनका भावास्वादन भिन्न है। सागर, सरोवर और सरिता की लहरों और पानी में अन्तर है। लहर में विशालता, तरंग में उठान और उर्मि में लधुता है। पानी में कठोरता, जल में सरसता और नीर में निर्मलता-शीतलता की प्रतीति होती है। इस प्रकार शब्दों के समानार्थी होने पर भी उनकी प्रकृति में भिन्नता होती है। तुलसीदास ने इसी को ध्यान में रखते हुये लिखा था कि प्रयोग के समय शब्दों की कठोरता, मृदुता, मंजुता आदि का ज्ञान होना जरूरी है -

अरथ अमित अति आखर थोरे।
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे।

शिक्षा और सर्जना-जगत में आज इसका ज्ञान धीरे-धीरे क्षीण होता जा रहा है। शब्द-शक्ति और व्याकरण आदि के अध्ययन-अध्यापन पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। कक्षाओं में पढ़ाया जाना लगभग बन्द है और शब्द-शास्त्र को पढ़ना अनावश्यक करार दिया जा रहा है। यही कारण है कि आज लेखन तथा सृजन में अशुद्धियों और अनुचित प्रयोगों की भरमार है। यह समझना जरूरी है कि मृग के साथ हम नयन (मृगनयनी) का प्रयोग करते हैं, पर यही प्रयोग भैंस या बैल के लिये नहीं हो सकता। वहां आँख ही सही प्रयोग है। नारी के संदर्भ में नेत्र का प्रयोग होगा, पर भैंस के नेत्र कहना मूर्खता ही मानी जावेगी। आज तमाम अनुचित और ऊटपटांग शब्द-प्रयोगों का औचित्य सिद्ध करने वाले साहित्यिक-महाबलियों की कमीं नहीं है। यही स्थिति कहावतों-मुहावरों की भी है।

संग्रह के इन छोटे-छोटे निबंधों के माध्यम से मैंने यह बतलाने की चेष्टा की है कि एक ही शब्द अन्य शब्दों के साथ जुड़कर अथवा संदर्भ बदलने पर अपना भावार्थ किस प्रकार बदल लेता है। हर भाषा के शब्द और प्रतीक मानवीय जीवन और समाज से जुड़े होते हैं। उनको लेकर तमाम कहावतें-मुहावरें प्रचलित हैं। इन निबंधों में उन्हीं कहावतों-मुहावरों, मुख्यतः मुहावरों के माध्यम से शब्दों से जुड़े भावार्थ-परिवर्तनों को संक्षेप में अंकित करने की चेष्टा की गई है। एक ही शब्द अलग-अलग मुहावरों में किस प्रकार अपना अर्थ बदल लेता है इसे पहचानना जरूरी भी है और

रोचक भी। तभी इस तथ्य का बोध होता है कि शब्द-शब्द में कितना अंतर है। शब्द-शास्त्र से दूर रहने वाले कबीरदास ने भी इस बात पर बल दिया था कि शब्द-शब्द के अंतर को गंभीरता से समझना चाहिये अन्यथा सार-भाव की सही प्राप्ति नहीं होगी -

शब्द-शब्द में अन्तरा, सार शब्द चित देय।
जा शब्दै साहब मिलै, सोई शब्द गहि लेय।।

रहीम ने तो शब्दों को नट जैसा कलाकार बताया है जो एक होकर भी अनेक कलायें दिखाकर रोमांचित करता है -

दीरघ दोहा अरथ के आखर थोरे आहिं।
ज्यों रहीम नट कुंडली सिमिट कूदि कढ़ि जाहिं।।

कहने का आशय यह है कि शब्द की महिमा का सभी ने गायन किया है और प्रयोग करते समय उसके भावार्थ के प्रति सजग रहने की भी बात कही है अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जायेगा। जैसे - छाती मारना और छाती पीटना एक ही नहीं है। पहले में श्रम का भाव है और दूसरे में शोक का। इसी प्रकार आरती उतारना और पानी उतारना में जमीन-आसमान का अन्तर है - यद्यपि उतारना दोनों में है। प्राय: देखा जाता है कि विद्यार्थियों को कहावतों-मुहावरों का सही प्रयोग करना नहीं आता क्योंकि उनका शब्द-बोध और कहावतों-मुहावरों का ज्ञान अत्यन्त सीमित होता है। विद्यार्थियों-जिज्ञासुओं को सही बोध और चेतना देने का यह लघु प्रयास है। इसमें गंभीरता की बजाय रोचकता का भी ध्यान रखा गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि इससे विद्यार्थी और जिज्ञासु पर्याप्त लाभान्वित होंगे।

पुस्तक को आकर्षक स्वरूप देने और समयावधि में छापने में जिला सहकारी संघ मुद्रणालय मर्या०, छतरपुर के प्रबंधक श्री बी.जी. पाण्डेय सहयोगी श्री गुप्ता जी एवं कम्प्यूटर ऑपरेटर श्री जीतेन्द्र बस्वापट्टनकर के साथ ही मेरे सुपुत्र चि. अभिलाष ने गहरी रुचि ली। मैं सभी को धन्यवाद देता हूँ।

१ मई, २००२

- गंगा प्रसाद बरसैंया
एम.आई.जी. १२, चौबे कॉलोनी, छतरपुर (म.प्र.)

परिचय

नाम : गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

जन्मतिथि : 6 फरवरी 1937

शिक्षा : एम.ए., पी.एच–डी.

सेवा : म.प्र. के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य। 31–12–96 को सेवानिवृत्त

निवास : एम.आई.जी.–12, चौबे कॉलोनी, छतरपुर (म.प्र.)☎:(07682) 41024

पुस्तकें :
1. हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार (शोधप्रबंध)
2. हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार
3. छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार
4. आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति, 5. रस विलास,
6. वीर विलास, 7. सुदामा चरित 8. चिन्तन–अनुचिन्तन,
9. बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार (शोधग्रंथ)
10. अरमान वर पाने का (व्यंग्य) 11. निंदक नियरे राखिये (व्यंग्य)
12. अथ काटना कुत्ते का भइया जी को (व्यंग्य)
13. तुलसी के तेवर, 14. कर्म और आराधना 15. रचना से रचना तक,
16. सृजन–विमर्श, 17. समवाय 18. नारी : एक अध्ययन
19. मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव, तथा अन्य

सम्मान–पुरस्कार :
1. महामहिम राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल जी शर्मा द्वारा 'साहित्य श्री'
2. अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा – 'साहित्य श्री' तथा 'भारत भाषा भूषण' से सम्मानित
3. नागरी प्रचारणी सभा, कानपुर द्वारा – 'साहित्य भारती'
4. तुलसी सम्मान व विद्रोही पुरस्कार
5. अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित

संस्थाओं से सम्बद्ध –
1. अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा के कला संकाय के पूर्व डीन, हिन्दी बोर्ड के अध्यक्ष व कार्यपरिषद के सदस्य
2. पूर्व डायरेक्टर, महाकवि केशव अनुसंधान केन्द्र, ओरछा, म.प्र.
3. म.प्र. आंचलिक साहित्यकार परिषद के उपाध्यक्ष
4. बुन्देलखण्ड कला संस्कृति परिषद, छतरपुर के अध्यक्ष
5. अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन, छतरपुर के अध्यक्ष आदि